B.A. History Hon's Part-I

Paper: I, Unit: III, Date: Lecture No. 25
26.9.2020

Lession: प्राचीन भारतीय इतिहास में कुषाणों की देन

कुषाणों की उत्पत्ति और प्रसार चीनी अनुश्रुतियों से ज्ञात होता है कि मध्य एशिया की खानाबदोश जाति हूंग-नू, वू-सुन और यू-ची पश्चिम चीन पर आक्रमण कर चीनी किसानों के जान-माल को लूट लिया करती थी। इसलिए हान वंश के सम्राट शी-हुआंग ने इन खानाबदोस जातियों से पश्चिमी चीन के रक्षार्थ तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में विशाल चीन की दीवार का निर्माण करवाया। कालान्तर में मध्य एशिया की खानाबदोश और पशुपालक जातियों के लिए चीन की पश्चिमी सीमा बन्द हो गयी। इसलिए विवश होकर ये जातियाँ अपने अस्तित्व के लिए आपस में संघर्षरत हो गयीं। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के शुभारम्भ में ही हूंग-नू नामक जाति ने यू-ची जाति को उनकी मातृभूमि से खदेड़ दिया। अराल सागर के मैदान से यू-ची जाति पाँच भागों में विभक्त हो गयी। हिउक्षी, शुआंगमी होतु, काओ-फू या तूभी और कुएई-शुआंग अथवा कुषाण। कुएई-शांग अथवा कुषाण लोग अराल सागर पारकर ताड़िया प्रदेश में आ बसे। यहाँ पर उन्होंने अपनी सत्ता जमा ली और अपना प्रसार करना प्रारंभ किया। परन्तु यहाँ भी वे हूंग-नू (हूण) जाति से पराजित होकर बास्त्री (बैक्ट्रिया) पहुँचे और भारतीयों के सम्पर्क में करने लगे। इसलिए संस्कृत साहित्य में इन्हें "यू-ची या त्रयषिक" नाम से पुकारा जाने लगा। फलतः भारतीय सीमा की वर्णशंकरी संस्कृति को ही अपनाना पड़ा। इस्वी सन् के प्रथम शताब्दी में भारतीय सीमा पर कुषाणों के नेता यवगू ने शेष चारों यू-ची शाखा को पराजित कर अपने अधीन कर लिया और बैक्ट्रिया के निचले हिस्से पर अपना राज्य स्थापित किया। कनिष्क कुषाण राजवंश का तीसरा और सबसे प्रभावशाली सम्राट था। वह विम-कडफिसस के बाद कुषाण जाति के दूसरे राजघराने का प्रथम शासक हुआ था।

मौर्य के पतन के बाद सर्वप्रथम कुषाणों ने ही एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की। राज्य में उत्तरी भारत और पश्चिमी सीमान्त प्रदेश के अलावा मध्य एशिया के कुछ भाग भी सम्मिलित थे। कुषाणों ने भारत के विभिन्न भागों का राजनीतिक एकीकरण किया।

शांति स्थापना: यूनानियों, सिथियनों और पर्शियनों के आपसी संघर्ष से उत्तरी भारत में अशांति का काल शुरू हो गया था, किन्तु कुषाणों ने एक सुव्यवस्थित प्रशासन की बुनियाद पर शांति स्थापित किया।

वाणिज्य एवं व्यापार: कुषाण काल में चीन, मध्य एशिया और रोमन साम्राज्य से भारत का व्यापारिक संबंध स्थापित हुआ। सीने के सिक्के मुख्यतः अन्तराष्ट्रीय व्यापार के लिए तैयार हुए। भारत से निर्यात होने वाली वस्तुओं में कपड़ा मुख्य है।

महायानवाद का उद्भव और विकास: कुषाण काल में बौद्ध धर्म का एक नया रूप हमारे सम्मुख आता है। हीनयान के स्थान पर महायानवाद का विकास इसी काल में हुआ। चौथी बौद्ध सभा का आयोजन कर तत्कालीन बौद्ध धर्म में एकरूपता लाई गई और त्रिपिटकों पर भाष्य तैयार हुआ।

धार्मिक सहिष्णुता: कुषाण राजाओं ने किसी धर्मविशेष का पक्षपात नहीं किया। कनिष्क स्वयं बौद्ध धर्म था तथा वासुदेव ने शैव धर्म स्वीकार किया। कुषाण राजाओं ने अपने सिक्कों में ईरानी, यूनानी, भारतीय सभी के देवताओं को स्थान दिया।

मूर्तिकला: भारतीय कला को कुषाण काल में बुद्ध का मानव रूप में प्रस्तुत करने का रिवाज कुषाणों के समय सही शुरू हुआ।

मूर्तिकला की दो शैलियों का विकास क्रमशः गान्धार और मथुरा केन्द्र के हुआ। गांधार के शिल्पियों ने बुद्ध को अपोलो देवता के समान प्रस्तुत करने का प्रयास किया। तपस्या करते हुए बुद्ध की उपवास ग्रस्त कंकाल मूर्ति न केवल शारीरिक शास्त्र की दृष्टि से तथ्यात्मक है, गांधार शैली का काल पहली शती ई० और चौथी शती ई० के बीच निश्चित किया जाता है।

मथुरा शैली: मथुरा के शिल्पियों ने भी अपना विषय बुद्ध और उनके जीवन की घटनाओं को ही लिया। सफेद चित्तीदार लाल पत्थर का प्रयोग, विशालता, मुन्डित मस्तक, माथे पर ऊर्णा, कपड़े को दिखलाने के लिए गहरा निशान आदि। बुद्ध का निर्माण पद्मासन पर नहीं बल्कि सिंहासन पर होता था। गांधार शैली से प्रभावित होकर कुछ मूर्तियों का निर्माण हुआ और बुद्ध को मूछों और चप्पल के साथ दिखलाना, आसन गोष्ठी के दृश्य, हेराक्लीज़ सिंह के ऊपर कोरिन्थ शैली का अभिषेक आदि। इस प्रकार इन्डोयूनानी शैली का विकास हुआ।

वास्तुकला: कुषाण राजा महान निर्माता थे। कनिष्क के दरबार में यूनानी इन्जीनियर अजेसिलॉस की उपस्थिति इस बात की पुष्टि करती है कि कुषाणों का वास्तु कला की उन्नति में रुचि था। इन राजाओं ने सिरसुख, कनिष्कपुरी, हुष्कपुर आदि नगरों का निर्माण किया। मथुरा, तक्षशिला, पेशावर आदि स्थानों में बौद्ध विहार और स्तूप बनवाये गये।

साहित्य: कुषाण राजाओं के काल में संस्कृत साहित्य का पुनरुत्थान हुआ। कुषाण दरबार में अश्वघोष, वसुमित्र, नागार्जुन, चरक, मंथर आदि विद्वान एवं दार्शनिकों को स्थान मिला।

सिक्के: कुषाण राजाओं ने सोने और चाँदी के सिक्कों का प्रचलन किया। पृष्ठ भाग पर यूनानी, रोमन, ईरानी और भारतीय देवी देवताओं का अंकन। इन सिक्कों का तौल रोमन पद्धति पर आधारित था जिससे यह भली-भांति स्पष्ट होता है कि सोने के सिक्कों का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में होता होगा।

शक-सम्वत: कनिष्क ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में शक-सम्वत अथवा कनिष्क सम्वत की स्थापना 78 ई० (A.D-78) में की।

सामाजिक व्यवस्था: कुषाणों का आधिपत्य और शासनकाल सामाजिक व्यवस्थाओं के लिए इस काल में विदेशी जातियों को भारतीय धर्म और समाज में अंगीकार किये जाने के कारण भारतीय वर्णव्यवस्था में ही नहीं जाति-प्रथा में भी छूट और ढील दिये जाने लगा। रुसी इतिहासकार ने भी स्वीकार किया है कि "यूनानी बाख्त्रिया और मध्य-एशियाई खानाबदोश जातियों का कुषाण साम्राज्य में जहाँ ईरान से लेकर भारत तक एक मिश्रित समाज की स्थापना हुई, जिसने मिश्रित नस्ल और उनकी संस्कृति एक दूसरे से घुल-मिल जाने के कारण पूर्वी दुनिया में एक नयी सांस्कृतिक विकास को जन्म दिया।" इस तरह कुषाण शासनकाल में भारतीय राजनीति ही नहीं सामाजिक व्यवस्था भी प्रभावित हुई थी।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर.